Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत की 5 ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था : चुनौतियाँ और रोडमैप

डॉ. विवेक कुमार पटेल* श्री राजपाल यादव**

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आज भारत विश्व की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। लगभग 3.7 ट्रिलियन डॉलर की वर्तमान GDP के साथ भारत न केवल अपने विशाल जनसंख्या, बल्कि अपने विविध संसाधनों, नवाचार क्षमता और युवा कार्यबल के दम पर वैश्विक आर्थिक मानचित्र पर तेजी से उभर रहा है।भारत 21वीं सदी में विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में से एक बनने की ओर अग्रसर है। सरकार ने वर्ष 2024–25 तक देश की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है जो एक महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक लक्ष्य है।यह लक्ष्य न केवल भारत की आर्थिक क्षमता को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक मंच पर देश की भूमिका को भी पुनर्परिभाषित करता है।

यह लक्ष्य केवल आर्थिक वृद्धि का आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह उस समावेशी विकास की दिशा में एक कदम है, जिसमें देश के प्रत्येक वर्ग को आर्थिक समृद्धि का लाभ मिल सके। यह 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसे अभियानों के माध्यम से घरेलू उत्पादन, रोजगार सृजन और निर्यात वृद्धि को बढ़ावा देने का एक मंच भी है।आज भारतने अमेरिका, चीन, जापानऔर जर्मनी के बाद विश्व की 5 वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनी हुई है। अब भारत के पुनरूत्थान के लक्ष्य अर्थात विकसित भारत– 2047 की ओर तेजी से ये अर्थव्यवस्था अग्रसर बनी हुई है। हालांकि, इस विकास यात्रा में कई बाधाएँ भी हैं। वैश्विक आर्थिक मंदी, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ, भू–राजनीतिक तनाव, ऊर्जा संसाधनों की सीमाएं, शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र की कमियाँ तथा असमान क्षेत्रीय विकासये सभी ऐसे कारक हैं जो इस लक्ष्य की राह में रोड़े अटका सकते हैं।भारत ने 2023 में जी – 20के 17वें सम्मलेन की अध्यक्षता सफलतापूर्वक करके विश्व भर को 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा से परिचित कराकर एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य One Earth, One Family & One Future का प्रेरक सन्देश दिया है।

इस शोध आलेख के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि भारत को इस आर्थिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, और साथ ही यह भी देखेंगे कि इन चुनौतियों से पार पाने के लिए क्या रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। साथ ही हम एक समग्र रोडमैप प्रस्तुत करेंगे, जो भारत को आर्थिक रूप से न केवल मजबूत बनाएगा, बल्कि उसे वैश्विक नेतृत्व की ओर भी अग्रसर करेगा।

कुंजी शब्द – सकल घरेलू उत्पाद, डिजिटल इंडिया,स्टार्टअप इंडिया,सकल मूल्य वर्धित,लॉजिस्टिक्स MSME, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक, जीएसटी, ड्रोन, सेंसर, AI और IoT,रिमोट सेंसिंग,GIS, समर्थन मूल्य, BPO, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020

भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति

1. भारत की GDP(सकल घरेलू उत्पाद) – भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। वर्ष 2023 में भारत की GDP (सकल घरेलू उत्पाद) लगभग 3.7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच चुकी है, जो इसे विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाती है। यह उपलब्धि देश की निरंतर विकासशील नीतियों, उद्यमिता, तकनीकी प्रगति और जनसंख्या की उत्पादकता का परिणाम है।भारत की अर्थव्यवस्था कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों पर आधारित है, जिसमें सेवा क्षेत्र का योगदान सबसे अधिक है। सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं, स्वास्थ्य सेवा और टेलीकॉम जैसे क्षेत्र भारत के आर्थिक इंजन बन चुके हैं। इसके अलावा, डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसे सरकारी कार्यक्रमों ने नवाचार और निवेश को प्रोत्साहित किया है।विदेशी निवेशके क्षेत्र में भी भारत एक आकर्षक गंतव्य बना हुआ है। विदेशी कंपनियाँ भारत में निर्माण, टेक्नोलॉजी और रिटेल सेक्टर में भारी निवेश कर रही हैं, जिससे रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि हो रही है।

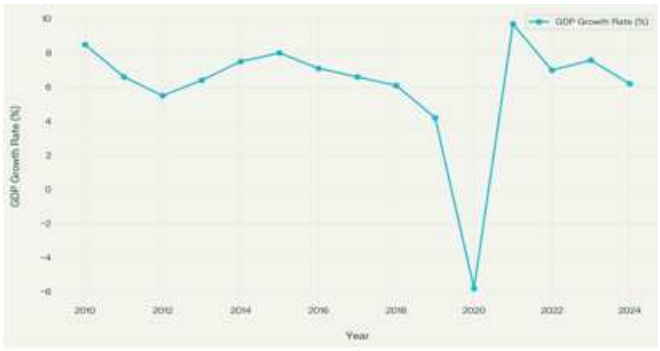

ऊपर दिए गए ग्राफ में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि दर को 2010 से 2024 तक दर्शाया गया है। यह ग्राफ भारत की अर्थव्यवस्था में समय के साथ आए उतार–चढ़ाव को स्पष्ट रूप से दिखाता है।

1. 2010–2016 तक स्थिर वृद्धि रही है – 2010 में GDP वृद्धि दर 8.5% थी, जो 2012 तक घटकर 5.5% हो गई।इसके बाद 2014–2016

के बीच अर्थव्यवस्था ने पुन: गति पकड़ी और वृद्धि दर 7.5%–8% तक पहुंच गई।

2. 2017–2019 तक धीमी वृद्धि रही है – 2017 से GDP वृद्धि दर में गिरावट शुरू हुई, जो 2019 में 4.2% तक पहुंच गई। यह गिरावट मुख्यत: वैश्विक आर्थिक मंदी और घरेलू आर्थिक चुनौतियों के कारण हुई थी।

3. 2020 में Covid–19 का प्रभाव रहा है – 2020 में महामारी के कारण GDP वृद्धि दर –5.8% तक गिर गई, जो रिकॉर्ड निम्न स्तर था। यह गिरावट लॉकडाउन और आर्थिक गतिविधियों में ठहराव का परिणाम थी।

4. 2021–2023 तक वृद्धि की पुनर्प्राप्ति हुयी है – 2021 में अर्थव्यवस्था ने तेजी से वापसी की और GDP वृद्धि दर 9.7% तक पहुंच गई। हालांकि, इसके बाद 2022 और 2023 में क्रमश: 6.99% और 7.58% की स्थिर लेकिन धीमी गति से विकास हुआ।

5. 2024 वृद्धि में स्थिरीकरण आया है – 2024 में GDP वृद्धि दर लगभग 6.2% रही। यह पिछले वर्षों की तुलना में कम है लेकिन स्थिरता को दर्शाती है। उच्च ऊर्जा कीमतें, RBI की सख्त मौद्रिक नीति, और वैश्विक आर्थिक दबावों ने इस धीमी गति को प्रभावित किया।

भारत की अर्थव्यवस्था लंबी अवधि में लगभग 6% की औसत वृद्धि दर बनाए रखने की उम्मीद है। हालांकि, ऊर्जा कीमतें, वैश्विक व्यापार संबंध, और घरेलू नीतियां इस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं। यह विश्लेषण भारत की अर्थव्यवस्था के लचीलेपन को दर्शाता है, जो गंभीर चुनौतियों के बावजूद पुनर्प्राप्ति करने में सक्षम रही है।भारत की अर्थव्यवस्था लंबी अवधि में लगभग 6% की औसत वृद्धि दर बनाए रखने की उम्मीद है। हालांकि, ऊर्जा कीमतें, वैश्विक व्यापार संबंध, और घरेलू नीतियां इस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं।यह विश्लेषण भारत की अर्थव्यवस्था के लचीलेपन को दर्शाता है, जो गंभीर चुनौतियों के बावजूद पुनर्प्राप्ति करने में सक्षम रही है।

2. सेवा क्षेत्र का GDP में योगदान – भारत के सेवा क्षेत्र ने पिछले कुछ दशकों में अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और यह देश की GDP का प्रमुख घटक बन गया है।नीचे सेवा क्षेत्र के योगदान का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. **सकल मूल्य वर्धित (GVA) में हिस्सेदारी:** वित्त वर्ष 2014 में सेवा क्षेत्र का GVA में योगदान50.6% था, जो वित्त वर्ष 2025 में बढ़कर लगभग 55% हो गया है सेवा क्षेत्र की वास्तविक वृद्धि दर महामारी के बाद वित्त वर्ष 2023–25 में औसतन 8.3% रही, जबकि महामारी से पहले यह दर 8% थी।

2. **रोजगार सृजन:** सेवा क्षेत्र देश के कुल कार्यबल का लगभग 30.7% रोजगार प्रदान करता है।यह क्षेत्र आधुनिक सेवाओं और कौशल आधारित रोजगार को बढ़ावादेता है, जिससे श्रमिकों के कृषि और विनिर्माण से सेवा क्षेत्र की ओरस्थानांतरण को प्रोत्साहन मिलता है।

3. **सेवाओं का निर्यात:** भारत वैश्विक सेवा निर्यात में सातवें स्थान पर है, जिसकी हिस्सेदारी 4.3% है। वित्त वर्ष 2025 के अप्रैल–नवंबर महीनों में सेवाओं के निर्यात में 12.8% की वृद्धि दर्ज की गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है।

4. **वित्तीय प्रदर्शन और निवेश:** नवंबर 2024 तक सेवा क्षेत्र को कुल बकाया बैंक ऋण रू48.5 लाख करोड़ था, जिसमें सालाना आधार पर 13% वृद्धि दर्ज की गई।वित्त वर्ष 2025 (अप्रैल–सितंबर) में सेवा क्षेत्र को क्र 5.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI प्राप्त हुआ, जिसमें बीमा और वित्तीय सेवाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई।

5. **डिजिटल सेवाओं का विस्तार:** ऑनलाइन भुगतान, ई–कॉमर्स, और मनोरंजन प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल सेवाएं तेजी से बढ़ रही हैं, जिससे सेवा क्षेत्र को मजबूती मिली है।

6. **औद्योगिक सेवाकरण:** विनिर्माण उत्पादन में सेवाओं के उपयोग और उत्पादन के बाद मूल्य संवर्धन के माध्यम से सेवा क्षेत्र अप्रत्यक्ष रूप से GDP में योगदानकरता है।

7. **नीतिगत समर्थन:** सरकार ने नीतिगत सुधारों, निवेश प्रोत्साहन, कौशल विकास, और बाजार तक पहुंच सुगम बनाकर सेवा क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद की है। इसके अलावा, लॉजिस्टिक्स और भौतिक अवसंरचना पर ध्यान केंद्रित करनेसे इस क्षेत्र को महामारी के बाद तेजी से उबरने में सहायता मिली।

भारत का सेवा क्षेत्र आर्थिक विकास का मुख्य आधार बना हुआहै। डिजिटल सेवाओं और उच्च तकनीक सेवाओं की बढ़ती मांग इसे और अधिक सशक्तबना रही है। साथ ही, वैश्विक स्तर पर इसकी निर्यात क्षमता भी लगातार बढ़ रही है।

3. कृषि, विनिर्माण, और MSME **क्षेत्रों का** GDP **में योगदान–** भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि, विनिर्माण और MSME (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) क्षेत्रों का योगदान महत्वपूर्ण है। नीचेइन तीन क्षेत्रों के GDP में योगदान का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. **कृषि क्षेत्र–**कृषि क्षेत्र भारत के GDP में लगभग 14% का योगदान करता है, हालांकि इसके हिस्से में गिरावट देखी गई है।2024–25 के दूसरे तिमाही मेंकृषि क्षेत्र की विकास दर 3.5% रही। हाल के वर्षों में, कृषि क्षेत्र नेऔसतन 5% वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की है।कृषि क्षेत्र ग्रामीणभारत की रीढ़ है, जहां 45% श्रमिक कार्यरत हैं। यह न केवल GDP में योगदानदेता है बल्कि ग्रामीण आय और जीवन स्तर सुधारने में भी सहायक है।कृषि से जुड़े उद्योग जैसे डेयरी, मत्स्य पालन और पोल्ट्री भी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं।

2. **विनिर्माण क्षेत्र –** विनिर्माण क्षेत्र का GDP में योगदान 13–14% के बीच है। 2023 में यह आंकड़ा 12.93% था। 2023–24 में विनिर्माण क्षेत्र की उत्पादन वृद्धि दर 1.4% रही, जबकि 2022–23 में यह 4.7% थी।उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं और राज्य स्तरीय औद्योगिक नीतियों ने इस क्षेत्र को बढ़ावा देने का प्रयास किया है।औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के अनुसार, जनवरी 2025 में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर 5.5% रही।

3. MSME **क्षेत्र –** MSME क्षेत्र भारत के GDP में लगभग 30% का योगदान करता है। सरकार ने इसे 2025 तक 50% तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन यह लक्ष्य अभी अनिश्चित है।MSME ने लगभग 20.39 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान किया है, जिसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार के उद्यम शामिल हैं। MSME कुल औद्योगिक उत्पादन का लगभग 45% और भारत के निर्यात का 40% से अधिक हिस्सा प्रदान करता है।

मुख्य चुनौतियाँ – भारत ने 2024–25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। हालांकि, इस लक्ष्य को हासिल करने की राह में कई चुनौतियाँ हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

1. **बेरोजगारी और कौशल विकास–**

1. **युवा आबादी का दबाव:** भारत की जनसंख्या में युवाओं का बड़ा हिस्सा है। हर साल लाखों युवा रोजगार के लिए तैयार होते हैं, लेकिन उनके लिए पर्याप्त नौकरियाँ उपलब्ध नहीं हैं।

2. **संगठित और असंगठित क्षेत्र:** असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोगों की संख्या अधिक है, जहाँ स्थिर रोजगार और सामाजिक सुरक्षा की कमी है।

3. **तकनीकी परिवर्तन:** ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों ने पारंपरिक नौकरियों को प्रभावित किया है, जिससे नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

4. **कौशल का अभाव:** कई युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित नहीं होते।

5. **प्रशिक्षण संस्थानों की कमी:** ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में गुणवत्तापूर्ण तकनीकी प्रशिक्षण केंद्रों की कमी है।

6. **नीति और क्रियान्वयन में अंतर:** सरकार की 'स्किल इंडिया' जैसी योजनाओं का उद्देश्य सराहनीय है, परंतु इनके क्रियान्वयन में अनेक खामियाँ देखी गई हैं।

2. **अवसंरचना की कमी –**

1. **परिवहन अवसंरचना की चुनौतियाँ:** देश के कई हिस्सों में सड़कों, रेलवे और बंदरगाहों की स्थिति अभी भी खराब है।मालवाहन और यात्री परिवहन की धीमी गति आर्थिक विकास को बाधित करती है।लॉजिस्टिक्स की उच्च लागत भारतीय उत्पादों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पीछे करती है।

2. **ऊर्जा क्षेत्र की असमानताएँ:** ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में अब भी बिजली की अनियमित आपूर्ति एक बड़ी समस्या है।अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने की योजनाएँ हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन धीमा है।

3. **शहरी अवसंरचना की कमी:** तेजी से बढ़ते शहरीकरण के बावजूद स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स और शहरी सुविधाएँ अभी भी अधूरी हैं।जल निकासी, यातायात प्रबंधन, और कचरा निपटान जैसे बुनियादी ढांचे में कमी से आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं।

4. **डिजिटल अवसंरचना की असमान पहुँच:** डिजिटल इंडिया अभियान के बावजूद, कई ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में इंटरनेट की धीमी गति और सीमित पहुँच देखी जाती है।डिजिटल कौशल और ई-गवर्नेंस सेवाओं की कमी भी एक बाधा है।

5. **नीति और निवेश से संबंधित समस्याएँ:** अवसंरचना परियोजनाओं में देरी, भूमि अधिग्रहण की समस्याएँ, और नौकरशाही प्रक्रिया निवेशकों को हतोत्साहित करती हैं।सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

3. **विनिर्माण क्षेत्र में पिछड़ापन–**भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 15-17% के बीच है, जबकि चीन जैसे देशों में यह 25-30% से अधिक है। 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं के बावजूद यह क्षेत्र अपेक्षित गति से नहीं बढ़ पाया है।

1. **अपर्याप्त आधारभूत संरचना**: कई क्षेत्रों में बिजली, परिवहन, लॉजिस्टिक्स आदि की सुविधाओं की कमी विनिर्माण इकाइयों को प्रभावित करती है।

2. **तकनीकी पिछड़ापन:** ऑटोमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और आधुनिक उत्पादन तकनीकों का सीमित उपयोग प्रतिस्पर्धा में भारत को पीछे रखता है।

3. **कुशल श्रमबल की कमी:** तकनीकी रूप से प्रशिक्षित श्रमिकों की उपलब्धता सीमित है, जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है।

4. **नीतिगत जटिलताएँ:** लाइसेंसिंग, जीएसटी, लेबर लॉ आदि की जटिलताओं के कारण कई उद्यमों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

5. **निवेश में कमी:** घरेलू और विदेशी निवेशकों का विश्वास बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है, विशेषकर जब 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में सुधार सीमित हो।

4. **नीतिगत जटिलता और क्रियान्वयन की धीमी गति–**

1. **नीतियों की जटिलता:** भारत में कई बार नीतियाँ अच्छी मंशा से बनाई जाती हैं, लेकिन उनका ढांचा इतना जटिल होता है कि जमीनी स्तर पर लोगों के लिए उन्हें समझना और अपनाना मुश्किल हो जाता है।व्यापार, निवेश और उद्यमिता को प्रोत्साहन देने वाली नीतियाँ अक्सर विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के बीच समन्वय की कमी से प्रभावित होती हैं।

2. **नियमों और मंजूरियों की भरमार:** 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' की दिशा में सुधार तो हुए हैं, परंतु आज भी छोटे और मध्यम उद्योगों को विभिन्न प्रकार की मंजूरियाँ और क्लियरेंस लेने में लंबा समय लगता है।कर प्रणाली में भी कई बार अस्पष्टता और अनिश्चितता देखने को मिलती है।

3. **क्रियान्वयन में देरी:** कई बार योजनाओं की घोषणा हो जाती है, लेकिन उनका क्रियान्वयन समय पर नहीं हो पाता, जिससे आर्थिक विकास की रफ्तार धीमी पड़ती है। बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं में देरी और लागत बढ़ना आम समस्या है।

4. **नीति और जमीनी हकीकत में अंतर:** कई योजनाएँ जमीनी जरूरतों से मेल नहीं खातीं। उदाहरण के लिए, डिजिटल इंडिया जैसी योजनाएँ ग्रामीण इलाकों में नेटवर्क और डिजिटल साक्षरता की कमी से पूरी क्षमता से लागू नहीं हो पातीं।

5. **जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय दबाव–**

1. **खेती और खाद्य सुरक्षा पर असर:** भारत की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण बेमौसम बारिश, सूखा, और गर्मी की तीव्र लहरें कृषि उत्पादन को प्रभावित करती हैं, जिससे खाद्य आपूर्ति और किसानों की आय पर असर पड़ता है।

2. **जल संसाधनों की कमी:** ग्लेशियरों के पिघलने, भूजल स्तर के गिरने और वर्षा के पैटर्न में बदलाव के कारण जल संकट गहराता जा रहा है, जो कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोगतीनों को प्रभावित करता है।

3. **तटीय क्षेत्रों में खतरा:** समुद्र स्तर में वृद्धि और चक्रवातों की बढ़ती आवृत्ति तटीय राज्यों की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से पर्यटन और मछली पालन पर नकारात्मक असर डालती है।

4. **वायु और जल प्रदूषण:** तेजी से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने भारत के कई प्रमुख शहरों को विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार कर दिया है। इससे जनस्वास्थ्य, श्रम उत्पादकता और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में हानि होती है।

5. **जैव विविधता का नुकसान:** जंगलों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से भारत की जैव विविधता खतरे में है, जो दीर्घकालिक सतत विकास के लिए आवश्यक है।

6. **अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ:** शहरीकरण के साथ ठोस कचरे और प्लास्टिक की समस्या गंभीर होती जा रही है, जिसका प्रभाव मिट्टी,

जल और समुद्री जीवन पर पड़ रहा है।

7. हिन्द महासागर असुरक्षा एवं अन्तकराष्ट्रीय व्यापार : अप्रैल 2025 में थाईलैंड में सम्पन्न हुए बिम्सिटेक के 6 वें शिखर सम्मेलन में हिन्द महासागर से जुडे, भारत एवं अन्यं तटीय देशों के मध्यी आपसी व्या पार के साथ ही सामुद्रिक सुरक्षा का प्रश्न भी छाया रहा । विश्व के तीसरे सबसे बड़ा महासागर के रूप में हिन्द महासागर वर्तमान भू-राजनीति के केन्द्र में आता जा रहा है । इस महासागर ने हमेशा न केवल भारत की सामुद्रिक सुरक्षा की है, बल्कि अन्तेराष्ट्रीय व्यापार और सांस्कृतिक संबन्धों को भी मजबूत किया है । इसका क्षेत्रफल 74 मिलियन वर्ग किलोमीटर है और वर्तमान में इसके तटवर्ती देशों की संख्याक 40 है ।

रोडमैप: 5 ट्रिलियन डॉलर की ओर-

1. औद्योगिक विकास और विनिर्माण को बढ़ावा देना-

1. बुनियादी ढांचे का विकास: औद्योगिक कॉरिडोर, लॉजिस्टिक्स हब, और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं का तीव्र विकास।परिवहन, बिजली, जल आपूर्ति और डिजिटल कनेक्टिविटी को मजबूत बनाना।

2. 'मेक इन इंडिया' को सशक्त बनाना: घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए नीतिगत सुधार। रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बनने की रणनीति।

3. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग को समर्थन: आसान ऋण सुविधा, तकनीकी उन्नयन और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ना।क्लस्टर आधारित विकास मॉडल अपनाना।

4. श्रम और भूमि सुधार: श्रम कानूनों को लचीला बनाना, श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा देना।भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना।

5. नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा: अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाना।स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों के साथ तालमेल।

6. हरित और टिकाऊ औद्योगिकीकरण: पर्यावरण अनुकूल तकनीकों का उपयोग।ऊर्जा कुशल उत्पादन प्रणाली को प्रोत्साहन।

2. कृषि क्षेत्र का आधुनिकीकरण-

1. तकनीकी उन्नयन और स्मार्ट खेती: ड्रोन, सेंसर,AI और IoT जैसी आधुनिक तकनीकों को खेती में अपनाना।रिमोट सेंसिंग और GIS डेटा के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान और फसल प्रबंधन।स्मार्ट इरिगेशन और जल संरक्षण तकनीकों का प्रयोग।

2. कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण: किसानों को नई तकनीकों और आधुनिक खेती के तरीकों की जानकारी देना।एग्रीकल्चर एक्सटेंशन सर्विस को मजबूत करना।किसान उत्पादक संगठनों के जरिए सामूहिक प्रशिक्षण और संसाधनों की पहुँच बढ़ाना।

3. मूल्य श्रृंखला का विकास: उत्पादन से लेकर बाजार तक एक सशक्त सप्लाई चेन का निर्माण।भंडारण सुविधाओं, कोल्ड स्टोरेज और प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना।किसानों को सीधे बाजार से जोड़ने के लिए ई-नाम (E-Nam) और डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार।

4. वित्तीय समावेशन और निवेश: किसानों को आसान ऋण उपलब्ध कराना।निजी और विदेशी निवेश को आकर्षित करना, विशेष रूप से एग्रीटेक स्टार्टअप्स में।कृषि बीमा योजना को व्यापक और पारदर्शी बनाना।

5. टिकाऊ और जैविक खेती को बढ़ावा: जैविक खाद, कीटनाशक और प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देना।मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखना और इसके परीक्षण को नियमित करना।पर्यावरण-संवेदनशील खेती की ओर बदलाव।

6. नीति सुधार और कृषि कानून: किसानों को उनके उत्पाद की उचित कीमत मिले, इसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की व्यवस्था को मजबूत करना।फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करना द केवल गेहूं और चावल पर निर्भरता कम करना।मंडी व्यवस्था में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना।

3. सेवा क्षेत्र का विस्तार-

1. आईटी और आईटीईएस का विकास: भारत की आईटी कंपनियां विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। निर्यात को और बढ़ावा देना होगा।उभरती तकनीकें जैसे AI, मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा में कौशल विकास।डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना।

2. पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र: भारत के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करना।ई-वीजा प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाना।बुनियादी सुविधाएं (सड़कें, होटल्स, गाइड्स) में सुधार।

3. स्वास्थ्य सेवा : मेडिकल टूरिज्मको प्रोत्साहन, भारत की सस्ती और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं।ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में टेली मेडिसिन का विस्तार।निजी व सार्वजनिक अस्पतालों की साझेदारी (PPP मॉडल) को बढ़ावा।

4. शिक्षा और कौशल विकास: एडटेक स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करना।ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म को ग्रामीण भारत तक पहुंचाना।विदेशी छात्रों के लिए भारत को शिक्षा केंद्र बनाना।

5. वित्तीय सेवाएं: डिजिटल बैंकिंग और फिनटेक स्टार्टअप्स को सहयोग देना।वित्तीय समावेशन के लिए जनधन, UPI, रूपे जैसे प्लेटफार्म को और मजबूत बनाना।

6. व्यावसायिक सेवाएं : लॉजिस्टिक्स, कंसल्टिंग, कानूनी सेवाओं, अकाउंटिंग आदि में नवाचार।वैश्विक कंपनियों के लिए बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO)में भारत की स्थिति को और मजबूत करना।

7. सरकारी नीतियाँ और समर्थन: सेवा क्षेत्र को GST में राहत देना।स्टार्टअप्स और MSME के लिए विशेष प्रोत्साहन योजनाएं।

4. डिजिटल और भौतिक अवसंरचना का विकास-

1. परिवहन नेटवर्क का सशक्तिकरण: भारत माला परियोजना के तहत राष्ट्रीय राजमार्गों का विस्तार।सागर माला योजनासे बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और समुद्री परिवहन को बढ़ावा।रेलवे के आधुनिकीकरण सेमी-हाई स्पीड ट्रेनों, विद्युतीकरण और स्मार्ट स्टेशनों का विकास।गति शक्ति योजना, बहु-मोडल कनेक्टिविटी के लिए समेकित अवसंरचना योजना।

2. शहरी अवसंरचना का विकास: स्मार्ट सिटी मिशनके अंतर्गत तकनीकी समाधान, सुरक्षित आवास, जल आपूर्ति और स्वच्छता।मेट्रो रेल नेटवर्कका विस्तार।सड़क एवं फ्लाईओवरनिर्माण में निजी भागीदारी (PPP मॉडल) को बढ़ावा।

3. ऊर्जा अवसंरचना: नवीकरणीय ऊर्जा (सौर,पवन) में निवेश। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली पहुंचाने हेतु सौभाग्य योजना।ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर का निर्माण।

4. **डिजिटल अवसंरचना :** भारतनेट योजनाके तहत ग्राम पंचायतों तक हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचाना।5G नेटवर्क का तेजी से विस्तार और 6G की तैयारी।डिजिटल इंडिया मिशनके जरिए ई-गवर्नेंस और डिजिटल सेवाओं को गांव-गांव तक पहुंचाना।

5. **डिजिटल शिक्षा और स्वास्थ्य:** ई-विद्या, स्वयं, और दीक्षा पोर्टलके माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा।Esajeevani और टेलीमेडिसिन सेवाओं के जरिए ग्रामीण स्वास्थ्य तंत्र को मजबूती।

6. **डेटा केंद्र और साइबर सुरक्षा:** हाइपरस्केल डेटा सेंटर की स्थापना।डेटा स्थानीयकरण और साइबर सुरक्षा ढांचे को मजबूत करना।

5. **शिक्षा और कौशल विकास-**

1. **नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 का प्रभावी कार्यान्वयन:** शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहुआयामी और कौशल आधारित बनाने की दिशा में यह नीति एक बड़ा कदम है।

2. **प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (Foundational Literacy and Numeracy) पर विशेष ध्यान।

3. डिजिटल शिक्षा का विस्तारय ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की पहुंच सुनिश्चित करना।

4. STEM **शिक्षा को प्रोत्साहन:** विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित में रुचि व दक्षता बढ़ाना, ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत आगे बढ़ सके।

5. Skill India mission **को और मजबूती देना:** युवाओं को उद्योग आधारित व्यावसायिक प्रशिक्षण देना।

6. **पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप** PPP**:** उद्योगों के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करना जो बाजार की मांग के अनुसार हों।

7. MSME **सेक्टर में प्रशिक्षण के अवसर:** लघु व मध्यम उद्योगों के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम जो स्थानीय रोजगार बढ़ाएं।

8. **डिजिटल और उभरती तकनीकों में प्रशिक्षण:** AI, Data Science, Robotics, Cloud Computing जैसे क्षेत्रों में युवाओं को कुशल बनाना।

9. **रोजगार के साथ शिक्षा और प्रशिक्षण का समन्वय:**'Earn while you learn' मॉडल को प्रोत्साहन इंटर्नशिप और अप्रेंटिसशिप कार्यक्रमों का विस्तार।

10. **महिला शिक्षा और कौशल विकास:** उच्च शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा।महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देना।

11. **क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना:** पिछड़े क्षेत्रों के लिए विशेष शैक्षिक व कौशल विकास कार्यक्रम।स्थानीय भाषाओं में शिक्षा और प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध करानाजिससे भाषा बाधा न बने।

6. **नीतिगत स्थिरता और सुधार-**

1. **नीतिगत स्थिरता :**घरेलू और विदेशी निवेशकों में विश्वास पैदा करने के लिए स्थिर और पूर्वानुमेय नीतियाँ जरूरी हैं।जीएसटी और प्रत्यक्ष कर व्यवस्था को सरल और पारदर्शी बनाना।व्यापार समझौतों और निर्यात प्रोत्साहन नीतियों में स्थिरता।राजनीतिक स्थिरता और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में मजबूती।

2. **नीतिगत सुधार :** NPA नियंत्रण, डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा।निवेशकों को आकर्षित करने के लिए और अधिक उदारीकरण।ऋण सुविधा, टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन, और आसान नियामक ढांचा।स्मार्ट खेती, सिंचाई, और एग्री-टेक को बढ़ावा।कृषि उत्पादों की बाजार तक पहुँच सुनिश्चित करना।न्यूनतम समर्थन मूल्य(MSP),पारदर्शी और लाभकारी प्रणाली।प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव का विस्तार।मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट और पोर्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर।

3. **पर्यावरण और सतत विकास:** सोलर, विंड और हाइड्रो पर फोकस।क्लाइमेट चेंज से लड़ने के लिए प्रतिबद्धता।सतत शहरीकरण और बुनियादी ढाँचे में निवेश।

निष्कर्ष – भारत का 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य था र्थवादीहै, लेकिन इसके लिए समन्वित प्रयास, नीतिसुधार, और आधारभूत ढाँचे में निवेश की आवश्यकता है। यदि सरकार, उद्योग और समाज मिलकर काम करें तो यह लक्ष्य समय बद्ध तरीके से प्राप्त किया जा सकता है और भारत विश्व आर्थिक शक्ति बन सकता है।यदि भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है, तो उसेअवसंरचना के क्षेत्र में व्यापक सुधार करने होंगे। सड़कों, बिजली, डिजिटल नेटवर्क, और शहरी सुविधाओं में सुधार केवल आर्थिक वृद्धि को गति नहीं देंगे, बल्कि जीवन की गुणवत्ता भी बेहतर बनाएंगे। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकासात्मंक निष्पाकदन को देखकर अंतर्राष्ट्री य मुद्रा कोष,एशियाई विकास बैंक एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने वर्ष 2024-25 में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत से अधिक रहने का अनुमान लगाया है।

भारत का 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य केवल आर्थिक आकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र विकास की परिकल्पना है जिसमें हर नागरिक की भागीदारी और उसका कल्याण शामिल है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ निजी क्षेत्र, स्टार्टअप्स, कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र को मिलकर काम करना होगा।भारत ने विश्वक मंच पर अनेक क्षेत्रों में उपलब्धियां अर्जित की हैं, जैसेद मजबूत और विश्व स्नीगय होते विदेश संबंध,अंततिक्ष शोध में उत्कृष्टि प्रगति, विकासोन्मुबखी अर्थव्यवस्था, क्षेत्रीय सहयोग, सूचना प्रोद्यौगिकी, बहुध्रवीयता, उत्कृंष्टम नेतृत्वृ, पर्यावरण संरक्षण, सफल भू-राजनीति आदि।

भारत की जनसंख्या, विशेष रूप से युवा वर्ग, इसकी सबसे बड़ी ताकत है। यदि उन्हें उचित शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर मिलें, तो वे देश की उत्पादकता और नवाचार को अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।हालाँकि, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा, और सामाजिक असमानताएँ जैसी चुनौतियाँ इस राह को कठिन बना सकती हैं। इसके लिए दीर्घकालिक रणनीति, सशक्त संस्थान, और सतत विकास पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य होगा।भारत के लिए 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना न केवल एक आर्थिक मील का पत्थर है, बल्कि यह विश्व मंच पर भारत की शक्ति, क्षमता और नेतृत्व को स्थापित करने का एक ऐतिहासिक अवसर भी है। इसके लिए सरकार, उद्योग, किसान, श्रमिक, युवा महिला और समाज के हर वर्ग को मिलकर योगदान देना होगा।

यह लक्ष्य एक दिशा है, जो हमें नवाचार, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की ओर ले जाती है। 'विकास सबका, साथ सबका' की भावना के साथ भारत यदि अपनी नीतियों में स्थिरता, क्रियान्वयन में तेजी और संसाधनों के समुचित उपयोग को सुनिश्चित करता है, तो यह लक्ष्य केवल

संभव ही नहीं, बल्कि निकट भविष्य में साकार भी हो सकता है।'इस यात्रा में भारत को अपनी परंपराओं की जड़ों से जुड़े रहकर आधुनिकता की ओर अग्रसर होना होगा। तभी हम आर्थिक रूप से समृद्ध, सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और वैश्विक रूप से सम्मानित राष्ट्र बन सकेंगे।'

आज भारत का लगभग 90प्रतिशत तेल का आयत और 70 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय व्यापर जल मार्ग से ही होता है।अत: हिन्दत महासागरीय क्षेत्र में स्थानयी शांति एवं सुरक्षा बनी रहने पर ही भारत अपने राष्ट्र हितों की पूर्ति हेतु इसका पूर्ण दोहन करके अपनी विकास यात्रा को सुरक्षा एवं व्यापार हेतु निर्बाध रूप से जारी रख सकता है ।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूस के कजान शहर में अक्तूबर 2024 मे ब्रिक्स के 16 वें शिखर सम्मे्लन में अन्तमराष्ट्रीय राजनीति और व्यापार में भारत की उज्जवल संभावनाओं को इन शब्दों में व्यक्त किया है, 'अब भारत के पास कृषिगत व्यापार, ई–कामर्स, आपसी क्षेत्रीय सहयोग, सूचना प्रोद्यौगिकी, विशेष आर्थिक क्षेत्रों,अंतरिक्ष शोध आदि दर्जनभर क्षेत्रों में परस्पर सहयोग करने के अवसरों की भरपूर उपलब्धता है ।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Economic Survey of India 2022-23,Ministry of Finance, Government of India
2. https://www.indiabudget.gov.in
3. https://www.niti.gov.in/strategy-new-india-75
4. Handbook of Statistics on Indian Economy
5. https://www.rbi.org.in
6. India Development Update,भारत की आर्थिक वृद्धि, नीति सिफारिशें
7. https://www.worldbank.org/en/country/india
8. IMF Article IV Consultation Reports – India,भारत की वित्तीय स्थिति, नीति सुझाव
9. https://www.imf.org/en/Countries/IND
10. मिश्रा,राजेश, भारतीय विदेश नीति : भूमंडलीकरण के दौर में, 2019, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रा.लि., हैदराबाद।
11. भारद्धाज,रामदेव,भारत एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध,2018, मध्यप्रदेश हिन्दीक ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
12. सिंह,बाल्मीमकी प्रसाद,21 वीं सदी : भू राजनीति लोकतंत्र और शांति, 2024,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,नई दिल्ली ।
13. श्रीवास्तव, सी.बी.पी. , भारत और विश्व राजनीति , 2002, किताब महल, नई दिल्ली।
14. कुमार अशोक, भारत की आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां, 2024, मैक्ग्रा हिल एजुकेशन (इंडिया) प्रा. लि., चैन्न्ई।

****